Journal Homepage: - www.journalijar.com

INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH (IJAR)

Article DOI: 10.21474/IJAR01/23038
DOI URL: http://dx.doi.org/10.21474/IJAR01/23038

ISSN (O): 2320-5407
ISSN (P): 3107-4928

CONFERENCE PAPER

राजस्थानी संगीत में विविध वाद्य यंत्रों का प्रयोग — एक अध्ययन

विक्रम[1] and **प्रो. डॉ. स्वाति शर्मा**[2]

1. शोधार्थी,संगीत विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालयजोधपुर.
2. शोध निर्देशिका एवं सहायक आचार्या,संगीत विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालयजोधपुर.

Manuscript Info

Manuscript History
Received: 04 January 2026
Final Accepted: 08 February 2026
Published: March 2026

Key words:-
राजस्थानी संगीत, वाद्य यंत्र, लोकसंगीत, ताल और लय, सांस्कृतिक संरक्षण

Abstract

राजस्थानी संगीत अपनी अनूठी माधुर्यता, जीवंतता और भावनात्मक गहराई के लिए प्रसिद्ध है। इसकी आत्मा इसकेवाद्य यंत्रोंमें निहित है, जो केवल ध्वनि उत्पन्न करने के साधन नहीं, बल्कि राजस्थान के सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन के अभिन्न अंग हैं। ये वाद्य यंत्र स्थानीय संसाधनों से बनाए जाते हैं, जैसे लकड़ी, बांस, धातु, पशुओं की खाल और नारियल का खोल। इनकी ध्वनि में मरुस्थल की गूंज और लोकजीवन की सरलता झलकती है, जिससे राजस्थानी लोकगीत और नृत्य पूर्ण होते हैं। राजस्थानी वाद्य यंत्रों का वर्गीकरण मुख्यतः चार प्रकार में किया जाता है—तत् (तार) वाद्य, सुषिर (वायु) वाद्य, अवनद्ध (ताल) वाद्यऔरघन (स्वयंस्वर) वाद्य। तत् वाद्य जैसे सारंगी, कमायचा और रावणहत्था तारों के कंपन से मधुर और भावपूर्ण ध्वनि उत्पन्न करते हैं, जो मानवीय स्वर के निकट होती है। सुषिर वाद्य जैसे शहनाई, बांसुरी, अलगोजा और पूंगी फूंक मारकर बजाए जाते हैं और ये संगीत में लय, मधुरता और भावनात्मक गहराई जोड़ते हैं। अवनद्ध वाद्य जैसे ढोल, ढोलक, नगाड़ा और चंग ताल और लय प्रदान करते हैं। इनके बिना लोकनृत्य जैसे घूमर और कालबेलिया अधूरे प्रतीत होते हैं। ढोलक और ढोलक जैसी वाद्य ध्वनि उत्सवों, विवाह और लोकगीतों में आनंद और ऊर्जा का संचार करती हैं। घन वाद्य जैसे खड़ताल, मंजीरा, थाली और मोरचंग

"© 2026 by the Author(s). Published by IJAR under CC BY 4.0. Unrestricted use allowed with credit to the author."

Corresponding Author:- विक्रम
Address:-शोधार्थी,संगीत विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालयजोधपुर.

आपस में टकराकर या झंकार उत्पन्न कर संगीत को सजाते हैं और तालबद्ध रखते हैं। राजस्थानी वाद्य यंत्र न केवल पारंपरिक संगीत में प्रयुक्त होते हैं, बल्किसामाजिक और सांस्कृतिक जीवनमें भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विवाह, त्योहार और धार्मिक अनुष्ठानों में इनकी ध्वनि वातावरण को मंगलमय बनाती है और समाज में उत्साह, एकता और सांस्कृतिक पहचान बनाए रखती है। आज के समय में ये वाद्य यंत्र फ्यूजन म्यूजिक, अंतरराष्ट्रीय मंचों और फिल्मों में भी उपयोग किए जा रहे हैं। हालांकि, आधुनिकता और नई पीढ़ी की व्यस्तताओं के कारण कुछ पारंपरिक वाद्य यंत्र संकट में हैं। आर्थिक कठिनाइयाँ, पारंपरिक ज्ञान का लोप और आधुनिक संगीत का प्रभाव इस परंपरा को खतरे में डाल रहे हैं। इसे संरक्षित करने के लिएसरकारी और गैर-सरकारी सहायता, संगीत विद्यालयों में लोकसंगीत का समावेश, कलाकारों को आर्थिक सहयोग और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर प्रचार जैसे उपाय आवश्यक हैं।

Introduction:-

भारत की सांस्कृतिक विविधता में राजस्थान का विशेष स्थान है। यहाँ की लोकसंस्कृति, वेशभूषा, खान-पान और संगीत अपनी अनूठी पहचान रखते हैं। विशेष रूप से राजस्थानी लोकसंगीत अपनी मधुरता, जीवंतता और भावनात्मक गहराई के लिए प्रसिद्ध है। इस संगीत की आत्मा इसके वाद्य यंत्रों में निहित है। ये वाद्य यंत्र केवल ध्वनि उत्पन्न करने के साधन नहीं हैं, बल्कि राजस्थान के सामाजिक, धार्मिक और ऐतिहासिक जीवन के अभिन्न अंग हैं। राजस्थान के वाद्य यंत्रों की विशेषता यह है कि इन्हें स्थानीय संसाधनों से तैयार किया जाता है और इनकी ध्वनि में मरुस्थल की गूंज, लोकजीवन की सरलता और भावनाओं की गहराई झलकती है। इन वाद्य यंत्रों के बिना राजस्थानी लोकगीत अधूरे प्रतीत होते हैं।

राजस्थानी वाद्य यंत्रों का वर्गीकरण:-

राजस्थान के वाद्य यंत्रों को उनकी संरचना, ध्वनि उत्पन्न करने की विधि और उपयोग के आधार पर चार मुख्य श्रेणियों में विभाजित किया जाता है। यह वर्गीकरण भारतीय संगीतशास्त्र की परंपरागत पद्धति पर आधारित है, जो प्राचीन काल से संगीत के अध्ययन और समझ को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करती आई है। इन चारों श्रेणियों में प्रत्येक का अपना अलग महत्व, उपयोग और विशेषता होती है, जो राजस्थानी लोकसंगीत को समृद्ध बनाती है। पहली श्रेणीतत् या तार वाद्य यंत्रोंकी है। इन वाद्य यंत्रों में तार (स्ट्रिंग्स) लगे होते हैं, जिनके कंपन से ध्वनि उत्पन्न होती है। इन्हें उंगलियों या धनुष (बो) की सहायता से बजाया जाता है। इस वर्ग के वाद्य यंत्र मधुर और भावपूर्ण ध्वनि प्रदान करते हैं, जो अक्सर मानवीय आवाज के निकट प्रतीत होती है। दूसरी श्रेणीसुषिर या वायु वाद्य यंत्रोंकी है। इन वाद्य यंत्रों को फूंक मारकर बजाया जाता है, जिससे इनके भीतर से वायु प्रवाहित होती है और ध्वनि उत्पन्न होती है। इनकी ध्वनि सामान्यतः मधुर, लयात्मक और दूर तक सुनाई देने वाली होती है। ये वाद्य यंत्र विशेष रूप से लोकगीतों और धार्मिक अवसरों पर उपयोग में लाए जाते हैं।

तीसरी श्रेणीअवनद्ध या ताल वाद्य यंत्रोंकी होती है। इन वाद्य यंत्रों में चमड़े की झिल्ली मढ़ी होती है, जिसे हाथों या डंडों से बजाया जाता है। इनका मुख्य कार्य संगीत में ताल और लय प्रदान करना होता है। लोकनृत्य और उत्सवों में इनका विशेष महत्व होता है, क्योंकि ये संगीत को गतिशील और उत्साहपूर्ण बनाते हैं। चौथी और अंतिम श्रेणीघन या स्वयंस्वर वाद्य यंत्रोंकी है। इन वाद्य यंत्रों में किसी प्रकार की झिल्ली या तार नहीं होते, बल्कि इन्हें आपस में टकराकर या हिलाकर ध्वनि उत्पन्न की जाती है। ये वाद्य यंत्र सरल होते हुए भी संगीत में लय और सजावट का कार्य करते हैं। इस प्रकार, राजस्थान के वाद्य यंत्रों का यह वर्गीकरण न केवल उनके प्रकारों को स्पष्ट करता है, बल्कि यह भी दर्शाता है कि लोकसंगीत में प्रत्येक वाद्य यंत्र का अपना विशिष्ट योगदान और स्थान है।

1. अवनद्ध (ताल) वाद्य यंत्र:-

अवनद्ध वाद्य यंत्र वे वाद्य होते हैं जिनमें किसी ढांचे पर चमड़े की झिल्ली (खाल) मढ़ी जाती है और उन्हें हाथों या डंडों की सहायता से बजाया जाता है। इन वाद्य यंत्रों का मुख्य कार्य संगीत में ताल और लय प्रदान करना होता है। राजस्थानी लोकसंगीत में इनका विशेष महत्व है, क्योंकि इनके बिना संगीत अधूरा प्रतीत होता है और नृत्य की गति भी प्रभावित होती है।

ढोलराजस्थान का सबसे प्रमुख और लोकप्रिय अवनद्ध वाद्य यंत्र है। यह सामान्यतः लकड़ी से बनाया जाता है और इसके दोनों सिरों पर चमड़ा चढ़ाया जाता है। इसे बजाने के लिए एक ओर हाथ का उपयोग किया जाता है, जबकि दूसरी ओर लकड़ी की छड़ी से प्रहार किया जाता है। ढोल की तेज और गूंजदार ध्वनि लोकनृत्य और उत्सवों में उत्साह और ऊर्जा भर देती है।

ढोलक, ढोल का छोटा रूप है, जो आकार में अपेक्षाकृत छोटा और हल्का होता है। इसे दोनों हाथों से बजाया जाता है और इसकी ध्वनि मधुर तथा लयबद्ध होती है। ढोलक का उपयोग विशेष रूप से विवाह समारोहों, लोकगीतों और घरेलू कार्यक्रमों में किया जाता है। यह पारिवारिक और सांस्कृतिक आयोजनों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

नगाड़ाभी एक प्रमुख अवनद्ध वाद्य यंत्र है, जो धातु जैसे तांबा या लोहे से बनाया जाता है। इसे आमतौर पर जोड़े में रखा जाता है और डंडों से बजाया जाता है। नगाड़े की ध्वनि बहुत तेज और प्रभावशाली होती है, इसलिए इसका उपयोग प्राचीन समय में युद्ध, शाही समारोहों और धार्मिक आयोजनों में किया जाता था।

चंग (ढफ)एक प्रकार का बड़ा डफ होता है, जो विशेष रूप से होली जैसे त्योहारों में बजाया जाता है। इसे लोहे या लकड़ी के गोल फ्रेम पर चमड़ा मढ़कर बनाया जाता है। इसे एक हाथ में पकड़कर दूसरे हाथ से तालबद्ध तरीके से बजाया जाता है। इसकी ध्वनि आनंद और उल्लास का वातावरण बनाती है।

इन सभी वाद्य यंत्रों की ताल और लय पर राजस्थानी लोकनृत्य जैसे घूमर और कालबेलिया अत्यंत आकर्षक और जीवंत बन जाते हैं। इस प्रकार, अवनद्ध वाद्य यंत्र राजस्थानी संगीत और संस्कृति के महत्वपूर्ण आधार हैं।

2. सुषिर (वायु) वाद्य यंत्र:-

सुषिर वाद्य यंत्र वे होते हैं जिन्हें फूंक मारकर बजाया जाता है। इन वाद्य यंत्रों में वायु के प्रवाह से ध्वनि उत्पन्न होती है, इसलिए इन्हें वायु वाद्य भी कहा जाता है। इनकी ध्वनि सामान्यतः मधुर, लयात्मक और दूर तक फैलने वाली होती है, जो श्रोताओं को आकर्षित करती है। राजस्थानी लोकसंगीत में सुषिर वाद्य यंत्रों का विशेष महत्व है, क्योंकि ये संगीत में भावनात्मक गहराई और मधुरता जोड़ते हैं। शहनाईएक अत्यंत प्रसिद्ध सुषिर वाद्य यंत्र है, जिसे विशेष रूप से विवाह और अन्य शुभ अवसरों पर बजाया जाता है। इसकी मधुर और गंभीर ध्वनि वातावरण को मंगलमय बना देती है। पारंपरिक रूप से इसे शुभता और आनंद का प्रतीक माना जाता है। बांसुरीएक सरल लेकिन प्रभावशाली वाद्य यंत्र है, जो बांस से बनाई जाती है। इसे बजाने के लिए उसमें बने छिद्रों को उंगलियों से नियंत्रित किया जाता है। बांसुरी की ध्वनि अत्यंत मधुर, शांत और मन को सुकून देने वाली होती है। यह लोकसंगीत के साथ-साथ शास्त्रीय संगीत में भी महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

अलगोजादो बांसुरियों का संयुक्त रूप होता है, जिन्हें एक साथ बजाया जाता है। इसमें एक बांसुरी मुख्य धुन बजाती है, जबकि दूसरी लय को बनाए रखती है। यह वाद्य यंत्र राजस्थान के लोकसंगीत में विशेष पहचान रखता है और इसकी ध्वनि बहुत आकर्षक होती है। पूंगी (बीन)का उपयोग मुख्यतः सपेरों द्वारा किया जाता है। इसे बजाने पर एक विशिष्ट और रहस्यमयी ध्वनि उत्पन्न होती है, जिसे सुनकर लोग आकर्षित हो जाते हैं। इसे पारंपरिक रूप से सांपों को नियंत्रित करने के लिए भी उपयोग में लाया जाता रहा है। बांकिया और नागफनीतुरही के समान वाद्य यंत्र हैं, जिनकी ध्वनि तेज और प्रभावशाली होती है। इनका उपयोग प्राचीन समय में युद्ध, जुलूस और अन्य सार्वजनिक आयोजनों में किया जाता था। ये वाद्य यंत्र उत्साह और ऊर्जा का वातावरण तैयार करते हैं। इस प्रकार, सुषिर वाद्य यंत्र राजस्थानी संगीत में मधुरता, लय और भावनात्मक अभिव्यक्ति को सशक्त बनाते हैं।

3. तत् (तार) वाद्य यंत्र:-

तत् वाद्य यंत्र वे वाद्य होते हैं जिनमें तार लगे होते हैं और उन्हीं तारों के कंपन से ध्वनि उत्पन्न होती है। इन वाद्य यंत्रों को उंगलियों या धनुष (बो) की सहायता से बजाया जाता है। राजस्थानी लोकसंगीत में इनका विशेष स्थान है, क्योंकि ये मधुर, भावपूर्ण और गहरी ध्वनि उत्पन्न करते हैं, जो श्रोताओं के मन को सीधे प्रभावित करती है। सारंगीराजस्थान का एक अत्यंत प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण तार वाद्य यंत्र है। इसमें कई तार होते हैं और इसे धनुष की सहायता से बजाया जाता है। इसकी ध्वनि इतनी मधुर और प्रभावशाली होती है कि यह मानवीय आवाज के बहुत करीब लगती है। इसलिए इसे लोकसंगीत में विशेष रूप से गायक के साथ संगत के रूप में उपयोग किया जाता है।

कमायचामंगनियार समुदाय का प्रमुख वाद्य यंत्र माना जाता है। यह लकड़ी से बना होता है और इसमें चार मुख्य तार होते हैं। इसे भी धनुष से बजाया जाता है। कमायचा की ध्वनि गहरी, मधुर और भावनात्मक होती है, जो राजस्थानी लोकसंगीत की पहचान बन चुकी है। रावणहत्थाएक प्राचीन तार वाद्य यंत्र है, जिसके बारे में यह मान्यता प्रचलित है कि इसका संबंध रावण से है। इसे नारियल के खोल और बांस से तैयार किया जाता है तथा इसमें तार लगाए जाते हैं। इसे भी धनुष से बजाया जाता है। इसकी ध्वनि विशिष्ट और आकर्षक होती है, जो लोककथाओं और पारंपरिक संगीत में विशेष प्रभाव उत्पन्न करती है। भपंग और चिकाराभी पारंपरिक तार वाद्य यंत्र हैं, जिनका उपयोग विभिन्न लोकगीतों में किया जाता है। इन वाद्य यंत्रों की ध्वनि सरल होते हुए भी प्रभावशाली होती है और ये संगीत में लय तथा मधुरता जोड़ते हैं। इस प्रकार, तत् वाद्य यंत्र राजस्थानी संगीत में भावनात्मक अभिव्यक्ति और मधुरता को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

4. घन (स्वयंस्वर) वाद्य यंत्र:-

घन वाद्य यंत्र वे वाद्य होते हैं जिनमें किसी प्रकार की झिल्ली या तार नहीं होते, बल्कि इन्हें आपस में टकराकर, हिलाकर या झंकार उत्पन्न करके बजाया जाता है। इन वाद्य यंत्रों से ध्वनि सीधे उनके ठोस शरीर से निकलती है, इसलिए इन्हें स्वयंस्वर वाद्य भी कहा जाता है। राजस्थानी लोकसंगीत में इनका उपयोग मुख्य रूप से लय बनाए रखने और संगीत को सजाने के लिए किया जाता है। खड़तालघन वाद्य यंत्रों में एक प्रमुख स्थान रखता है। यह सामान्यतः लकड़ी के टुकड़ों से बना होता है, जिन्हें हाथों में पकड़कर आपस में टकराया जाता है। खड़ताल की तेज और स्पष्ट ध्वनि भजन, कीर्तन और लोकगीतों में विशेष रूप से उपयोगी होती है। यह संगीत में लय को मजबूत बनाता है और प्रस्तुति को अधिक प्रभावशाली बनाता है। मंजीराछोटे-छोटे धातु के झांझ होते हैं, जिन्हें एक-दूसरे से टकराकर बजाया जाता है। इनकी ध्वनि मधुर और तीव्र होती है। मंजीरा का उपयोग धार्मिक अनुष्ठानों, भजनों और लोकसंगीत में व्यापक रूप से किया जाता है। यह वाद्य यंत्र संगीत में ताल और लय को बनाए रखने में सहायक होता है।

थालीभी एक सरल किन्तु प्रभावी घन वाद्य यंत्र है। यह सामान्य धातु की थाली होती है, जिसे किसी डंडे या अन्य धातु से टकराकर बजाया जाता है। इसका उपयोग विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में पारंपरिक अवसरों और धार्मिक कार्यक्रमों में किया जाता है। मोरचंगएक विशिष्ट और अनोखा वाद्य यंत्र है, जिसे मुंह में रखकर बजाया जाता है। इसमें एक धातु की जीभ (tongue) होती है, जिसे उंगली से हिलाया जाता है और मुंह के अंदर की गूंज से ध्वनि उत्पन्न होती है। इसकी ध्वनि अलग और आकर्षक होती है, जो लोकसंगीत में विशेष प्रभाव उत्पन्न करती है। इस प्रकार, घन वाद्य यंत्र अपनी सरलता के बावजूद राजस्थानी संगीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और संगीत की लय तथा सौंदर्य को बढ़ाते हैं।

वाद्य यंत्रों का निर्माण और सामग्री:-

राजस्थान के वाद्य यंत्रों की एक प्रमुख विशेषता यह है कि इन्हें बनाने के लिए स्थानीय और प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग किया जाता है। यह परंपरा न केवल इन वाद्य यंत्रों को विशिष्ट बनाती है, बल्कि उनमें क्षेत्रीय संस्कृति और प्रकृति का गहरा प्रभाव भी दर्शाती है। ग्रामीण और पारंपरिक कारीगर अपने आसपास उपलब्ध साधनों से ही इन वाद्य यंत्रों का निर्माण करते हैं, जिससे इनमें सादगी और मौलिकता बनी रहती है। इन वाद्य यंत्रों के निर्माण में विभिन्न प्रकार की सामग्रियों का उपयोग किया जाता है, जैसे—लकड़ी, बांस, धातु, पशुओं की खाल और नारियल का खोल। लकड़ी के लिए प्रायः बबूल और शीशम जैसे मजबूत पेड़ों का चयन किया जाता है, जो वाद्य यंत्र को टिकाऊ बनाते हैं। बांस का उपयोग विशेष रूप से बांसुरी और अन्य सुषिर वाद्य यंत्र बनाने में किया जाता है, क्योंकि यह हल्का और आसानी से आकार देने योग्य होता है।

धातुओं जैसे तांबा और पीतल का प्रयोग नगाड़ा, मंजीरा और अन्य घन वाद्य यंत्रों के निर्माण में किया जाता है, जिससे इनकी ध्वनि तेज और स्पष्ट होती है। पशुओं की खाल का उपयोग ढोल, ढोलक और अन्य अवनद्ध वाद्य यंत्रों में झिल्ली के रूप में किया जाता है, जो ताल और लय उत्पन्न करने में सहायक होती है। इसके अलावा, नारियल के खोल का उपयोग रावणहट्टा जैसे कुछ विशेष वाद्य यंत्रों में किया जाता है। इन सभी प्राकृतिक सामग्रियों के उपयोग से वाद्य यंत्रों की ध्वनि में एक विशिष्ट प्राकृतिकता और स्थानीयता झलकती

है। यही कारण है कि राजस्थानी वाद्य यंत्र न केवल संगीत का माध्यम हैं, बल्कि वे इस क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान और पारंपरिक ज्ञान का भी प्रतिनिधित्व करते हैं।

सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व:-

राजस्थानी वाद्य यंत्र केवल संगीत और मनोरंजन का साधन नहीं हैं, बल्कि ये सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। इनके माध्यम से न केवल संगीत का आनंद मिलता है, बल्कि समाज में उत्साह, एकता और सांस्कृतिक पहचान भी बनी रहती है। विवाह समारोहों मेंशहनाई, ढोल और नगाड़ाबजाए जाते हैं, जो खुशी और उल्लास का माहौल पैदा करते हैं। त्योहारों में भी इनका विशेष महत्व है। उदाहरण के लिए, होली में चंगऔरदीपावली में मंजीराका प्रयोग होता है, जिससे त्योहार की रंगीनता और आनंद बढ़ता है। धार्मिक अनुष्ठानों मेंखड़ताल और मंजीराका उपयोग किया जाता है, जो भक्ति और श्रद्धा की भावना को प्रकट करते हैं। इसी प्रकार, लोकनृत्य जैसेघूमर और कालबेलियामेंढोल और ढोलककी ताल पर नृत्य की गति और लय बढ़ती है। इस प्रकार, राजस्थानी वाद्य यंत्र केवल ध्वनि उत्पन्न करने वाले उपकरण नहीं हैं, बल्कि ये समाज में सांस्कृतिक एकता, पारंपरिक ज्ञान और आनंद के प्रतीक हैं, जो पीढ़ी दर पीढ़ी संस्कृति को जीवित रखते हैं।

आधुनिक युग में वाद्य यंत्रों का परिवर्तन:-

आज के समय में राजस्थानी वाद्य यंत्रों का प्रयोग केवल पारंपरिक संगीत तक सीमित नहीं रह गया है। ये वाद्य यंत्र अबफ्यूजन म्यूजिकमें भी उपयोग किए जा रहे हैं, जहां इन्हें आधुनिक संगीत के साथ मिलाकर नई ध्वनियाँ बनाई जाती हैं। इसके अलावा, राजस्थान के वाद्य यंत्रों कोअंतरराष्ट्रीय मंचोंपर भी प्रस्तुत किया जा रहा है, जिससे विदेशी दर्शक भी इनकी मधुरता और अनूठे स्वर से परिचित हो रहे हैं। बॉलीवुड और अन्य संगीतफिल्मों और एल्बमोंमें भी इन वाद्य यंत्रों का प्रयोग बढ़ रहा है, जिससे उनकी लोकप्रियता और महत्व और बढ़ा है। हालांकि, आधुनिक युग की व्यस्तताओं और नई तकनीकों के प्रभाव के कारण कुछ पारंपरिक वाद्य यंत्रों का अस्तित्व संकट में है। नई पीढ़ी के कलाकार अब इन वाद्य यंत्रों के बजाय आधुनिक वाद्य या डिजिटल संगीत उपकरणों की ओर अधिक आकर्षित हो रही है। इसलिए, पारंपरिक वाद्य यंत्रों की सुरक्षा और उन्हें आगे बढ़ाने के लिए जागरूकता और संरक्षण आवश्यक है।

राजस्थानी लोकवाद्य परंपरा आज कई चुनौतियों का सामना कर रही है। सबसे बड़ी समस्याआर्थिक संकटहै, क्योंकि अधिकांश पारंपरिक कलाकारों को अपने वाद्य यंत्रों से पर्याप्त आय नहीं हो पाती। इसके कारण उनका जीवन संघर्षपूर्ण हो जाता है और कई कलाकार इस पेशे को छोड़ने को मजबूर हो रहे हैं। दूसरी चुनौती है किनई पीढ़ी अन्य व्यवसायों की ओर अधिक आकर्षित हो रही है। युवाओं को आधुनिक शिक्षा और रोज़गार के अवसर अधिक आकर्षक लगते हैं, इसलिए वे पारंपरिक संगीत सीखने और पेशेवर रूप से निभाने में कम रुचि दिखा रहे हैं। इसके अलावा, पारंपरिक ज्ञान का लोपभी चिंता का विषय है। संगीत और वाद्य यंत्रों की परंपरा पीढ़ी दर पीढ़ी चलती आई है, लेकिन अब यह मौखिक परंपरा धीरे-धीरे खत्म हो रही है। कई ऐसे कलाकार हैं जिन्होंने अपने अनुभव और तकनीकें बिना किसी दस्तावेज़ के ही सीखी हैं, जिससे उनका ज्ञान खो जाने का खतरा है।

साथ ही, आधुनिक संगीत का प्रभावभी पारंपरिक संगीत पर पड़ रहा है। युवा कलाकार और दर्शक अब पॉप, फ्यूजन और डिजिटल संगीत की ओर अधिक आकर्षित हो रहे हैं, जिससे पारंपरिक वाद्य यंत्रों और लोकगीतों की लोकप्रियता कम हो रही है। इन सभी कारणों से राजस्थानी लोकवाद्य परंपरा संकट में है और इसे संरक्षित करने के लिए आर्थिक, सामाजिक और शैक्षिक स्तर पर सक्रिय प्रयासों की आवश्यकता है। राजस्थानी वाद्य यंत्रों और उनकी पारंपरिक संगीत परंपरा को बचाने और आगे बढ़ाने के लिए कुछ प्रभावी उपाय किए जा सकते हैं। सबसे पहले, सरकारी और गैर-सरकारी सहायताआवश्यक है। इसके तहत कलाकारों के लिए अनुदान, प्रशिक्षण कार्यक्रम और प्रदर्शनी आयोजित करना शामिल है, ताकि वे अपने कला कौशल को बनाए रख सकें और इसका आर्थिक लाभ उठा सकें।

दूसरा उपाय यह है किसंगीत विद्यालयों और पाठ्यक्रमों में लोकसंगीत और पारंपरिक वाद्य यंत्रों को शामिल किया जाए। इससे नई पीढ़ी को इन वाद्य यंत्रों के बारे में ज्ञान और अभ्यास करने का अवसर मिलेगा, और ये कला जीवित रहेगी। तीसरा महत्वपूर्ण कदम हैकलाकारों को आर्थिक सहयोग प्रदान करना। पारंपरिक कलाकारों को उनके प्रदर्शन और प्रशिक्षण के लिए वित्तीय सहायता मिलने से वे अपने कला क्षेत्र में निरंतर कार्य कर पाएंगे और नई पीढ़ी को प्रेरित कर सकेंगे। चौथा उपाय हैअंतरराष्ट्रीय मंचों पर राजस्थानी संगीत और वाद्य यंत्रों का प्रचार। फेस्टिवल, सांस्कृतिक कार्यक्रम और अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनियों के माध्यम से विदेशी दर्शकों को परिचित कराना पारंपरिक कला को वैश्विक मान्यता और सम्मान दिला सकता है। इन सभी उपायों के माध्यम से राजस्थानी वाद्य यंत्रों और लोकसंगीत की परंपरा को संरक्षित किया जा सकता है और आने वाली पीढ़ियों तक इसकी ध्वनि और सांस्कृतिक महत्व को पहुंचाया जा सकता है।

निष्कर्ष:-

राजस्थानी संगीत में वाद्य यंत्रों का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। ये वाद्य यंत्र न केवल संगीत को मधुर बनाते हैं, बल्कि राजस्थान की सांस्कृतिक पहचान को भी जीवित रखते हैं। इनकी ध्वनि में इतिहास, परंपरा और लोकजीवन की झलक मिलती है। आज आवश्यकता है कि हम इन वाद्य यंत्रों को संरक्षित करें और आने वाली पीढ़ियों तक इस समृद्ध विरासत को पहुंचाएं। राजस्थान के वाद्य यंत्र वास्तव में उस आत्मा की अभिव्यक्ति हैं, जो मरुभूमि की रेत में भी संगीत की धारा बहाती है।

संदर्भ:-

1. सिंह, डॉ॰ रितु. "राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत में अनुनादित वाद्य यन्त्र: एक परिशीलन."BHAIRAVI, vol. 30, Nov. 2025, doi:10.65403/bhairavi.vol30.001.
2. https://artandculturalaffairshry.gov.in/hi/%E0%A4%B8%E0%A4%82%E0%A4%97%E0%A5%80%E0%A4%A4-%E0%A4%95%E0%A5%87-%E0%A4%89%E0%A4%AA%E0%A4%95%E0%A4%B0%E0%A4%A3/
3. राठी, अक्षय कुमार, एवं डॉ. गौरव शुक्ल, "राजस्थान के लुप्तप्राय तन्तु वाद्यों का सांस्कृतिक एवं संगीतात्मक योगदान",SWAR SINDHU: A Pratibha Spandan Journal (राष्ट्रीय समकक्ष-समीक्षित/रेफरी जर्नल ऑफ़ म्यूजिक), खंड 13, अंक 2, जुलाई–दिसंबर 2025, ISSN 2320-7175।
4. मीना, संतोष कुमार, एवं रौशन भारती, "राजस्थान के संगीत की वर्तमान स्थिति एवं भविष्य का समीक्षात्मक अध्ययन."Remarking: An Analisation, खंड IX, अंक XI, फरवरी 2025, पृष्ठ नहीं उल्लिखित, DOI:10.5281/zenodo.14909219.
5. शेखावत, खुशिमता, एवं डॉ. गौरव शुक्ल, "राजस्थान की समग्र गायकी मांड में प्रयुक्त होने वाले लोक वाद्य",SWAR SINDHU: A Pratibha Spandan Journal (राष्ट्रीय समकक्ष-समीक्षित/रेफरी जर्नल ऑफ़ म्यूजिक), खंड 13, अंक 2, जुलाई–दिसंबर 2025, ISSN 2320-7175।